दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2022–23 दिनांक 27.08.2022

प्रकाशनार्थ

दिनांक 27.08.2022, गोरखपुर! भाषा विचार अभिव्यक्ति का माध्यम व साधन है। मानव समाज के जीवन यापन के विविध रीति–रिवाज को संस्कृति कहते हैं। मानव संसाधन की अनिवार्य आवश्यकता भाषा है। तो इसे सजाने सवारने एवं समाज और वैश्विक सामंजस्य बैठाने की जरूरत का नाम संस्कृति है। भाषा जहॉ मानवीय आवश्यकता की खोज है। वहीं विभिन्न संस्कृतियॉ हमारे जीवन के विविध रूप है। अतः भाषा और संस्कृति दोनो सामाजिक अर्जित सम्पदा है। दोनो के संरक्षण और सम्वर्द्धन से मानव समाज अद्यतन तथा समकक्षीय हो सकता है।

उक्त बातें दिग्जियनाथ पी.जी. कालेज में महंत दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के तृतीय दिवस पर 'भाषा, संस्कृति एवं समाज' विषय पर छात्र–छात्राओं का सम्बोधित करते हुए डॉ. संजीव राय, शैक्षिक सलाहकार एवं शिक्षाविद्, नई दिल्ली ने कही।

उन्होने आगे कहा कि भाषा और संस्कृति के बीच एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा, संस्कृति की मौखिक अभिव्यक्ति है। संस्कृति से ही देश के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है कि जिनके सहारे वह अपने आदर्शों व जीवन मूल्यों का निर्धारण करता है। हमारे पास जो सांस्कृतिक विरासत मौजूद है वह सर्वोत्कृष्ट है। यदि हम बाहर की संस्कृति से कुछ सीखते हैं तो वह संस्कृति भी हम से सीखती है। भाषा व सांस्कृतिक विविधताओं के बाद भी लोग एक दूसरे के भीतर सम्बन्धों के पुल बनाते हैं। हमारे जीवन में लोक भाषा का बड़ा ही महत्व है। लोक भाषा में होने के कारण ही श्रीरामचरितमानस को इतनी ख्याति मिली। समाज में अलग–अलग प्रकार के राग, समाज की अभिव्यक्ति को लोक भावना के माध्यम से सामने लाते हैं। समाज की शिक्षा से यह भी अपेक्षा रहती है कि वे समाज के ऋण को उतारें।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि भाषा और संस्कृति मानव समुदाय को जोड़ने का एक सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम होने के साथ ही संस्कृति की संवाहक भी होती है। भाषा ही मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है और भाषा के सहयोग से ही समाज का निर्माण होता है, जिससे शिक्षित समाज का विकास व नवनिर्माण सम्भव है। भौगोलिक, सांस्कृतिक और व्यवहारपरक विभिन्नता के कारण भाषा का प्रयोग भी सीमित व विशिष्ट होता है। भारतीय संस्कृति सर्वाधिक सम्पन्न और समृद्ध है तथा अनेकता में एकता ही इसकी मूल पहचान है। हमारा यह पूरा परिक्षेत्र बुद्ध के विचारों से प्रभावित है, सिद्धार्थ को दुनिया के सारे संसाधन जबतक उपलब्ध थे तबतक समाज ने आदर्श नहीं माना परन्तु जब सबकुछ त्यागकर आये तो समाज में बुद्ध के रूप में प्रतिस्थापित हुए। किसी समुदाय के आचरण की आदर्श संस्कृति ही हमारी पहचान बनती है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. विभा सिंह ने तथा स्वागत भाषण प्रोफेसर परीक्षित सिंह ने किया। इस कार्यक्रम में डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, श्री पीयूष सिंह, श्री भगवान सिंह, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. अदिति, डॉ. शैलेश सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. रूक्मिणी चौधरी सहित विद्यार्थी उपस्थित रहें।

डॉ. सुनील कुमार सिंह
सह-मीडिया प्रभारी